अंतिम पड़ाव : संघर्षपूर्ण मनोव्यथा का सफर

निशा कुमारी* नेहा कुमारी* साक्षी त्रिवेदी*

प्रस्तावना

''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्'' अर्थात् प्रतिदिन बुजुर्गो को प्रणाम करने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति में आयु, विद्या, कीर्ति और शक्ति इन चार चीजों की वृद्धि होती है। वर्तमान स्थितियों में परिवर्तन हो रहा है, मूल्य बदल रहे हैं, परिवारों का विघटन हो रहा है और वृद्धों के जीवनयापन को लेकर समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। जैसे-जैसे मनुष्य बुढ़ापे की ओर बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे अकेलापन, भय और असुरक्षा आदि समस्याएं उसे घेरने लगती हैं। मनोविज्ञान की दृष्टि से भी वृद्धावस्था में मनुष्य का स्वभाव एक बालक जैसा हो जाता है, उनको संभालने के लिए एक अलग तरह के व्यवहार की आवश्यकता पड़ती है, जो सबको नहीं आता। बुढ़ापे में मनुष्य को सुरक्षा और स्नेह दोंनों की आवश्यकता होती है, लेकिन बदलती परिस्थितियों और परिवेश में युवा वर्ग द्वारा वृद्धों के मनोविज्ञान को समझने का शायद प्रयास नहीं किया जाता।

कार्य क्षेत्र

हमारे साक्षात्कार का कार्यक्षेत्र दो शहरों तक सीमित रहा। साक्षात्कार के लिए हम प्रयागराज स्थित 'आधारशिला' नामक वृद्धाश्रम तथा दिल्ली स्थित 'अनन्या फाउंडेशन' द्वारा संचालित 'निर्मला' वृद्धाश्रम गए।

साक्षात्कार करने का उद्देश्य

हमनें एक कार्यक्रम को देखा जिसमें एक नामी पत्रकार द्वारा आठ वर्ष पूर्व दिल्ली के बदरपुर इलाके के एक वृद्धाश्रम में साक्षात्कार किया गया था, जिसमें पत्रकार ने वहाँ के जी. पी. भगत, जो उन बुजुर्गो की देखभाल करते हैं, ने बताया हैं कि उनके पास रोज लगभग चार से पांच फोन आते हैं, उसमें किसी को अपनी मां को तो किसी को अपने पिता को आश्रम में रखना होता है। वह उनको समझाते हैं परंतु उनका मुख्य कारण यह होता है कि जो उनके परिवार के वृद्ध व्यक्ति होते हैं वह अपनी साफ-सफाई तथा रोज की दिनचर्या के काम नहीं कर पाते, जिससे उन्हें दिक्कत आती है। वहाँ पर जो बुजुर्ग हैं उनमें से ज्यादातर लोग डिमेंशिया, लकवा आदि से ग्रसित हैं जिसके कारण वह अपना कोई भी कार्य नहीं कर पाते। यही कारण है कि उनके बच्चे, उनके परिवार वाले उनको वृद्ध आश्रम छोड़ गए हैं।

इस कार्यक्रम को देखने के पश्चात् हमें वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों से साक्षात्कार करने का विचार आया।

* एम.ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय।

आंकड़ें

सूची-1 : आयु वर्ग (वयोवृद्ध वर्ग के ब्यौरे के आधार पर) (कुल : 54)

आयु (वर्षों में)	संख्या	प्रतिशत
40 से 50 वर्ष	04	7.40
50 से 60 वर्ष	05	9.25
60 से 70 वर्ष	20	37.00
70 से 80 वर्ष	17	31.49
80 से 90 वर्ष	06	11.11
90 से 100 वर्ष	02	3.75
कुल	**54**	**100**

83.3 प्रतिशत से अधिक वृद्धाश्रम के निवासियों की आयु 60 वर्ष से अधिक पाई गई (54 में से 45)। केवल दो निवासियों की आयु 90 वर्ष से अधिक थी।

सूची-2 : व्यवसाय (साक्षात्कार के आधार पर) (कुल : 20)

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
गृहिणी	07	35
शिक्षा संस्था में कार्यरत	02	10
निजी कार्यालय में कार्यरत	03	15
निजी व्यवसाय	02	10
पब्लिक सेक्टर में कार्यरत	01	05
कृषि क्षेत्र में कार्यरत	04	20
अन्य	01	05
कुल	**20**	**100**

सूची-3 : शिक्षा (साक्षात्कार के आधार पर) (कुल : 20)

जेंडर	शिक्षा का स्तर	संख्या	प्रतिशत
पुरुष	1 - 5 वीं	00	00
	5 - 10 वीं	01	05
	10 - 12 वीं	04	20
	स्नातक	03	15
	अशिक्षित	04	20

महिला	1 - 5 वीं	01	05
	5 - 10 वीं	01	05
	10 - 12 वीं	02	10
	स्नातक	02	10
	अशिक्षित	02	10
कुल		**20**	**100**

वृद्धाश्रम में वयोवृद्धों से हुई बातचीत

जिस समाज में हम रह रहे हैं क्या वो भी पर्दादारी करता है? ऊपर से रेशमी और मुलायम और उसके पीछे छुपी धूप की वो किरणें जो उनको वो चमक देती है, क्या उसे कोई देखता ही नहीं है? इसी बात को सोचकर हम अपने सफर के सिलसिले में साक्षात्कार के लिए प्रयागराज स्थित 'आधारशिला' नामक वृद्धाश्रम तथा दिल्ली स्थित 'अनन्या फाउंडेशन' द्वारा संचालित 'निर्मला वृद्धाश्रम' गये थे। वहां रहने वाले वृद्धों से मिलने पर हमारे मन में वृद्ध लोगों के प्रति सहानुभूति तथा करुणा पैदा हुई। हमारी उनसे बातें कभी हास्य तो कभी ज्ञान तथा कभी पछतावा और कभी करुणा से भरी उनकी कहानियां तथा उनका नई पीढ़ी के लिए सलाह देना आदि अनेक बातें हमारे लिए तो शिक्षाप्रद रही तथा ये बातें इस शोध के माध्यम से सभी युवाओं के लिए भी होंगी। वो कहते हैं न कि घर में बड़े-बुजुर्ग हमें अपने अनुभवों से ही शिक्षा देते हैं क्योंकि उन्होंने हमसे ज्यादा जीवन को समझा व अनुभव किया होता है। इसी अनुभव को उन्होंने हमसे साक्षात्कार के माध्यम से साँझा किया। पहले वृद्धाश्रम में छत्तीस वृद्धों (36) और दूसरे वृद्धाश्रम में अठारह वृद्धों (18) यानि कुल चौवन (54) वृद्धों से बातचीत करके उनसे संबंधित ब्यौरा लिया लेकिन बातचीत का सफर हमने बीस (20) वृद्धों के साथ साँझा किया। जिनसे हमने बातचीत की उनमें बारह (12) पुरुष और आठ (8) स्त्री शामिल थी, उनमें से पांच वृद्ध शिक्षित थे, जिसमें एक स्त्री (1) और चार पुरुष (4) शामिल थे और पंद्रह अशिक्षित जिनमें आठ पुरुष (8) और सात स्त्रियाँ (7) थी, जिन्होंने हमें उनके वहाँ रहने के पीछे की वजह बताई, अपने आपको हमसे साँझा किया।

वृद्धाश्रम में एक वृद्ध दम्पत्ति से बातचीत के दौरान पता चला कि वे दोनों शिक्षित थे और पेशे से अध्यापक थे। उन्होंने बताया कि वो कानपुर में अध्यापन का कार्य करते थे। अध्यापक की नौकरी से दोनों सेवानिवृत्त होने के बाद अकेले हो गये और उनके बच्चे उनको अपने साथ नहीं रख पाए इसलिए उन्हें इस वृद्धाश्रम में छोड़ दिया। कारण पूछने पर उन्होंने हमसे कारण साँझा नहीं किया किंतु भावुक हो गए। हमने पूछा कि आपके बच्चे कहाँ हैं? उन्होंने बताया उनके दो बेटे हैं, एक बैंगलौर और एक दिल्ली में रहता है। परन्तु हम उनके बच्चों से संपर्क नहीं कर पाए। हमने पूछा कि वो आपसे मिलने आते हैं तो उन्होंने बताया कि वो कभी-कभी मिलने आते हैं।

वृद्धाश्रम में एक वृद्ध ने बताया कि उनकी बेटी अभी स्नातक की पढ़ाई कर रही है। उनको पैरालिसिस का अटैक होने के कारण उनकी बेटी ने उन्हें इस आश्रम में छोड़ दिया। उन्होंने बताया कि शुरुआत में तो बहुत मानसिक तनाव हुआ। स्वयं से मनोवैज्ञानिक रूप से यातना झेली। लेकिन अब वो यहाँ खुश हैं और अच्छे से जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनकी देखभाल अच्छे से होती है।

वृद्धाश्रम में हमें एक वृद्ध पुरुष ने बताया कि उनका कोई नहीं था, उनकी पत्नी की मृत्यु उनकी शादी के कुछ समय बाद ही हो गई थी (तकरीबन एक वर्ष बाद ही), उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने शादी भी नहीं की थी इसलिए उनकी कोई संतान भी नहीं थी। कुछ समय बाद वो अपनी सम्पति को भतीजों में बाँट कर, यहां वृद्ध आश्रम आ गए, अपनी वृद्धावस्था को गुजारने के लिए। अब वृद्धाश्रम में उनकी बहुत अच्छी देखभाल होती है। उनको कोई दिक्कत नहीं होती, समय पर खाना मिलता है, जब भी बीमार होते हैं तो वह लोग अस्पताल भी ले जाते हैं। उनकी यहाँ अच्छे से देख-रेख और सेवा होती है। वृद्ध आश्रम में एक वृद्ध महिला

ने बताया कि वो राजस्थान से परिवार के साथ प्रयाग घूमने के लिए आयी थी, लेकिन फिर उनके परिवार वालों ने उन्हें इस वृद्ध आश्रम में छोड़ दिया और चले गए। उन्होंने बताया कि उनके परिवार वाले उनको इस वृद्ध आश्रम में छोड़ने के बाद उनसे मिलने अभी तक नहीं आए और न ही बातचीत हुई।

वृद्ध आश्रम की यात्रा हमारे लिए एक गहरा तथा परिवर्तनकारी अनुभव रहा, जहाँ हमने उनके जीवन की एक झलक देखी, जो उनके अस्तित्व के अंतिम पड़ाव को दर्शाती है। दोनों ही वृद्ध आश्रमों में प्रवेश करते ही हमने एक अलग-सी शांति का अनुभव किया। वह शांति सकारात्मक थी, क्यों थी? इसको हम शब्दों में बयान नहीं कर सकते किंतु उनका अपनत्व हमें उनकी ओर आकर्षित कर रहा था। वहां निवास कर रहे बड़े-बुजुर्गों से मिलने पर उनके जीवन भर के अनुभवों को सुनने और देखने पर एक नया दृष्टिकोण मिला।

यथार्थस्थिति

वृद्धाश्रम में रहते हुए उन्हें इस बात की संतुष्टि प्राप्त हुई कि उन्हें समय-समय पर खाना, दवाइयां तथा बीमारी के समय में सही समय पर चिकित्सा व इलाज की सुविधाएँ उपलब्ध करवायी जाती हैं। वहाँ उन्हें अपने दुःख, दर्द व खुशी को साँझा करने के लिए हमउम्र के साथी मिल जाते हैं, जिससे वे अपने मानसिक तनाव और अकेलेपन को दूर कर पाते हैं।

उपसंहार

आधुनिकता की दौड़ में आज कई रिश्ते टूटते या बदलते जा रहे हैं। वृद्धों और नौजवानों के मध्य के रिश्तों को निभाने और बनाए रखने में लगाव और स्नेह सूत्रधार के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। लेकिन आज के समय में समाज में कई बदलाव आ गये हैं, वो बदलाव ही उनके मध्य के लगाव को कमजोर या बदल देता है, जिससे वृद्धों और युवाओं, दोनों के मध्य दूरियाँ बन जाती हैं। इन बदलावों को लाने में सबसे बड़ी भूमिका समय और वातावरण की होती है। इन बदलावों में दोनों पीढ़ियों का समय अलग, वातावरण अलग है, इसलिए विचारों और व्यवहारों में भी बदलाव दिखाई देने लग जाते हैं। युवाओं के मन में वृद्धजनों के प्रति एक नम्र व कोमल पक्ष है वह उनका सम्मान, आदर, सेवा और रक्षा करना जानते है किंतु आधुनिकीकरण के प्रभाव, स्वयं को विकसित करने की होड़ और तरक्की को पाने की लगन में युवाओं ने कहीं उस भावना को दबा-सा दिया है। परंतु युवा वर्ग अपने मन में इसे पुनः जागृत करें तथा इस पर ध्यान दें तो समाज का कल्याण होगा और सभ्यताओं और संस्कृतियों के मिश्रण और आधुनिकता से आए सामाजिक परिवेश में बदलाव आने पर वृद्धों की देखभाल को लेकर हमारी कार्यशैली में सुधार होगा।

❐❐❐

ISSN 2581-9917

चित्र : लेखिकाओं द्वारा

समीक्षक की टिप्पणी

समाज के वयोवृद्ध वर्ग की समस्याओं को लेकर किया गया यह शोध बहुत महत्वपूर्ण है। यह बहुत मार्मिक विषय है। क्योंकि हम आए दिन समाचारों में अकेले रह रहे वयोवृद्ध वर्ग के साथ होने वाली दुर्घटनाओं की खबरें पढ़ते और सुनते हैं। मनुष्य जीवन के मुख्यतः तीन पड़ाव हैं- बचपन, जवानी और बुढ़ापा। बचपन माता-पिता के साए में बीत जाता है। जवानी में व्यक्ति अपने-आप में ही इतना मजबूत होता है कि उसे किसी और सहारे की जरूरत ही नहीं पड़ती। अब रह जाता है बुढ़ापा। बुढ़ापा जीवन की एक ऐसी अवस्था है जब हमारे शरीर के सभी अंग धीरे-धीरे काम करना बंद कर देते हैं और हमें हर मोड़ पर किसी न किसी सहारे की जरूरत पड़ती है। इसलिए बुढ़ापे को अक्सर लोग जीवन का अभिशाप मानते हैं लेकिन अगर युवा पीढ़ी घर के बुजुर्गों का थोड़ा-सा भी सहयोग करे तो बुढ़ापा युवा वर्ग और स्वयं बूढ़ों के लिए वरदान बन सकता है। पहले जब संयुक्त परिवार होते थे तो बड़े-बुजुर्गों की सेवा आसानी से हो जाती थी क्योंकि घर में कोई न कोई उनकी देखरेख के लिए मौजूद रहता ही था, लेकिन तत्कालीन समाज में बहुत परिवर्तन आ गया है। अब जीवन बहुत तेजी से भाग रहा है और वक्त की कमी लगभग सभी के पास रहती है। ऐसे में आज का युवा वर्ग अपने बड़े-बूढ़ों को समय नहीं दे पाता। परिणामस्वरूप बूढ़े लोगों को वृद्धाश्रम की शरण लेनी पड़ती है, यह बहुत दुःख की बात है। वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या चिंता का विषय है। इस शोध की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शोधार्थियों ने वृद्धाश्रमों में जाकर साक्षात्कार लिए। वहां रहने वाले बुजुर्गों की व्यथा और समस्याओं को जाना। मुझे उम्मीद है कि जो भी युवा इस शोध को पढ़ेगा वह एक बार जरूर कह उठेगा कि मैं अपने माता-पिता के साथ ऐसा कुछ नहीं करूंगा, जिससे उनको वृद्धाश्रम जाना पड़े, यही इस शोध की सफलता होगी।

❐❐❐

-अनीता देवी